MAKTABA TUL MADINAH

Fazaaile Istighfaar (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 254
Weekly Booklet : 254

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "मदनी पन्ज सूरह" की एक क़िस्त मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

फ़ज़ाइले इस्तिग़फ़ार

सफ़हात 20

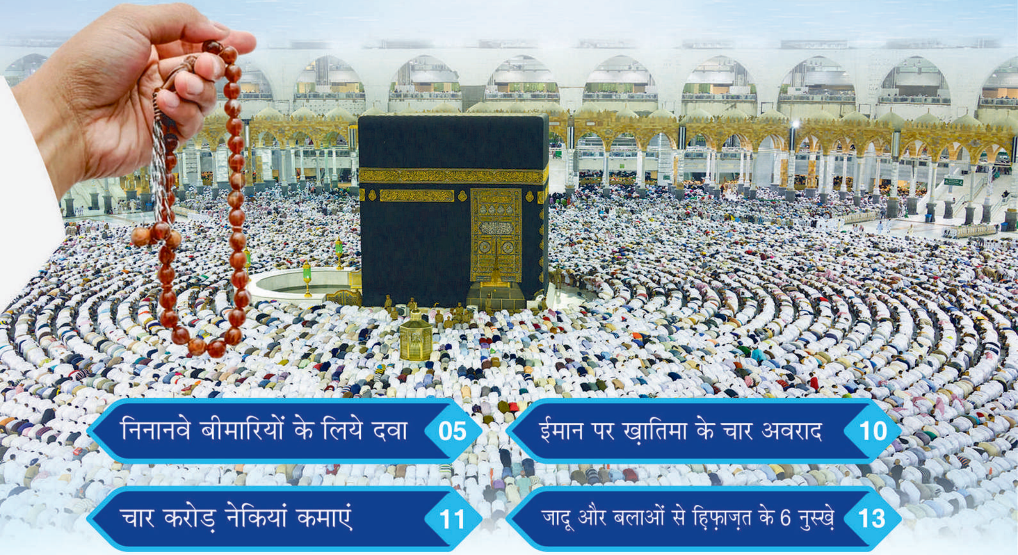

निनानवे बीमारियों के लिये दवा 05
ईमान पर ख़ातिमा के चार अवराद 10
चार करोड़ नेकियां कमाएं 11
जादू और बलाओं से हिफ़ाज़त के 6 नुस्ख़े 13

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **फ़ज़ाइले इस्तिग़फ़ार**

सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

फ़ज़ाइले इस्तिग़्फ़ार

येह रिसाला (**फ़ज़ाइले इस्तिग़्फ़ार**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج٥١ ص١٣٨دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब "मदनी पन्ज सूरह" सफ़्हा 139 ता 161 से लिया गया है।

फ़ज़ाइले इस्तिग़फ़ार

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़्हात का रिसाला : "**फ़ज़ाइले इस्तिग़फ़ार**" पढ़ या सुन ले उसे, तेरी रिज़ा के लिये ज़ियादा से ज़ियादा ज़िक्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मुझे सुवार के प्याले के मानन्द न बनाओ कि सुवार अपने प्याले को पानी से भरता है फिर उसे रखता है और सामान उठाता है फिर जब उसे पानी की ह़ाजत होती है तो उसे पीता है, वुज़ू करता है वरना उसे फेंक देता है लेकिन मुझे तुम अपनी दुआ़ के अव्वलो आख़िर और दरमियान में याद रखो। (مجمع الزوائد، 10/239، حدیث:17256)

ख़ुदाया वासित़ा मीठे नबी का शरफ़ अ़त्तार को ह़ज का अ़त़ा हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

"मग़्फ़िरत" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से इस्तिग़फ़ार करने के 5 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ दिलों के ज़ंग की सफ़ाई

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातमुन्नबिय्यीन,

महबूबे रब्बुल आलमीन, صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : बेशक लोहे की तरह दिलों को भी ज़ंग लग जाता है और इस की जिला (या'नी सफ़ाई) इस्तिग़्फ़ार करना है। (مجمع الزوائد، 10/346، حدیث:17575)

﴾2﴿ परेशानियों और तंगियों से नजात

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जिस ने इस्तिग़्फ़ार को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया **अल्लाह** पाक उस की हर परेशानी दूर फ़रमाएगा और हर तंगी से उसे राहत अता फ़रमाएगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अता फ़रमाएगा जहां से उसे गुमान भी न होगा।

(ابن ماجہ، 4/257، حدیث:3819)

﴾3﴿ ख़ुश करने वाला आ'माल नामा

हज़रते ज़ुबैर बिन अव्वाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, रसूले अकरम, صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुसर्रत निशान है : जो इस बात को पसन्द करता है कि उस का नामए आ'माल उसे ख़ुश करे तो उसे चाहिये कि उस में इस्तिग़्फ़ार का इज़ाफ़ा करे।

(مجمع الزوائد، 10/347، حدیث:17579)

﴾4﴿ ख़ुश ख़बरी !

हज़रते अब्दुल्लाह बिन बुस्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जो अपने नामए आ'माल में इस्तिग़्फ़ार को कसरत से पाए।

(ابن ماجہ، 4/257، حدیث:3818)

﴾5﴿ सय्यिदुल इस्तिग़्फ़ार पढ़ने वाले के लिये जन्नत की बिशारत

हज़रते शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुरसलीन, صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह सय्यिदुल इस्तिग़्फ़ार है : اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُکَ وَاَنَا عَلٰی عَھْدِکَ وَوَعْدِکَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَکَ بِنِعْمَتِکَ عَلَیَّ اَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّہٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ۔"(1)

जिस ने इसे दिन के वक़्त ईमान व यक़ीन के साथ पढ़ा फिर उसी दिन शाम होने से पहले उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह जन्नती है और जिस ने रात के वक़्त इसे ईमान व यक़ीन के साथ पढ़ा फिर सुब्ह होने से पहले उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह जन्नती है। (بخاری،4/190،حدیث:6306)

"वाहिद" के चार हुरूफ़ की निस्बत से कलिमए तय्यिबा के 4 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ ख़ुश नसीब कौन

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ियामत के दिन आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से बहरा मन्द होने वाले ख़ुश नसीब लोग कौन होंगे ? फ़रमाया : ऐ अबू हुरैरा ! मेरा गुमान येही था कि तुम से पहले मुझ से येह बात कोई न पूछेगा क्यूं कि मैं ह़दीस सुनने के मुआ़मले में तुम्हारी ह़िर्स को जानता हूं, क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त पाने वाला ख़ुश नसीब वोह होगा जो सिद्क़ दिल से "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ" कहेगा। (بخاری،1/53،حدیث:99)

(1)...**तरजमा :** " ऐ **अल्लाह** पाक ! तू मेरा रब है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तूने मुझे पैदा किया मैं तेरा बन्दा हूं और ब क़द्रे त़ाक़त तेरे अ़हदो पैमान पर क़ाइम हूं, मैं अपने किये के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, तेरी ने'मत का जो मुझ पर है इक़रार करता हूं और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करता हूं मुझे बख़्श दे कि तेरे सिवा कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता।"

﴾2﴿ अफ़्ज़ल ज़िक्र व दुआ

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" है और सब से अफ़्ज़ल दुआ "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" है। (ابن ماجہ،4/248،حدیث:3800)

﴾3﴿ आस्मानों के दरवाज़े खुल जाते हैं

हज़रत अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस बन्दे ने इख़्लास के साथ "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" कहा तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, यहां तक कि वोह अ़र्श तक पहुंच जाता है जब कि कबीरा गुनाहों से बचता रहे।" (ترمذی،5/340،حدیث:3601)

﴾4﴿ तज्दीदे ईमान

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि इस्लाम के सब से बड़े मुबल्लिग़ रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने ईमान की तज्दीद कर लिया करो। अ़र्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम अपने ईमान की तज्दीद कैसे किया करें ? फ़रमाया : "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" कसरत से पढ़ा करो। (مسند امام احمد،3/281،حدیث:8718)

"जन्नत" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से "سُبْحَانَ اللّٰہِ وَ بِحَمْدِہٖ" पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ गुनाह मिटा दिये जाते हैं

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : जो सो मर्तबा "سُبْحَانَ اللّٰہِ وَ بِحَمْدِہٖ" पढ़ता है उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों। (ترمذی،5/287،حدیث:3477)

﴾2﴿ सोने का पहाड़ सदक़ा करने का सवाब

हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिस के लिये रात में इबादत करना दुश्वार हो या वोह अपना माल ख़र्च करने में बुख़्ल से काम लेता हो या दुश्मन से जिहाद करने से डरता हो तो वोह "سُبْحَانَ اللّٰہِ وَ بِحَمْدِہٖ" कसरत से पढ़ा करे क्यूं कि ऐसा करना **अल्लाह** पाक को अपनी राह में सोने का पहाड़ सदक़ा करने से ज़ियादा पसन्द है।

(مجمع الزوائد، 10/112، حدیث:16876)

﴾3﴿ जन्नत में खजूर का दरख़्त

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो "سُبْحَانَ اللّٰہِ وَ بِحَمْدِہٖ" पढ़ता है उस के लिये जन्नत में खजूर का एक दरख़्त लगा दिया जाता है। (مجمع الزوائد، 10/111، حدیث:16875)

"आक़ा" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ" पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ जन्नत का दरवाज़ा

हज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े के बारे में न बताऊं ? अ़र्ज़ की गई : वोह क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ" (مجمع الزوائد، 10/118، حدیث:16897)

﴾2﴿ निनानवे बीमारियों के लिये दवा

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि अह़मदे मुज्तबा

मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه" कहा तो येह (उस के लिये) निनानवे बीमारियों की दवा है उन में सब से हलकी बीमारी रन्जो अलम है। (الترغيب والترہیب،2/285،حدیث:2448)

﴾3﴿ ने'मत की हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा

हज़रते उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के रह़मत वाले नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिसे **अल्लाह** पाक ने कोई ने'मत अ़ता फ़रमाई फिर वोह बन्दा उस ने'मत को बाक़ी रखना चाहता हो तो उसे चाहिये कि "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه" की कसरत करे।

(معجم کبیر،17/311،حدیث:859)

बेदार होते वक़्त के 3 अवराद

﴾1﴿ **हज़रते** उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने नींद से बेदार हो कर कहा : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه[1]

फिर "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ" कहा या कोई दुआ मांगी तो उसे क़बूल कर लिया जाएगा, फिर अगर वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी तो उस की नमाज़ क़बूल कर ली जाएगी। (بخاری،1/391،حدیث:1154)

﴾2﴿ **हज़रते** अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि

1...तरजमा : **अल्लाह** पाक के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी की ख़ूबियां और वोह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है **अल्लाह** पाक है और **अल्लाह** पाक ख़ूबियों वाला है और **अल्लाह** पाक के सिवा कोई मा'बूद नहीं,और **अल्लाह** पाक सब से बड़ा है और गुनाह से बचने की क़ुव्वत और नेकी करने की त़ाक़त **अल्लाह** पाक ही की त़रफ़ से ह़ासिल होती है।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने नींद से बेदार होते वक़्त[1] "بِسْمِ اللّٰهِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ، اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَ كَفَرْتُ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ"

दस दस मर्तबा पढ़ा तो हर उस गुनाह से बचा लिया जाएगा जिस का उसे ख़ौफ़ हो और कोई गुनाह उस तक न पहुंच सकेगा।

(مجمع الزوائد،10/174، حدیث:17060)

﴾3﴿ "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَ اِلَيْهِ النُّشُوْرُ" तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** पाक के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द ह़यात (बेदारी) अ़त़ा फ़रमाई और हमें उसी की त़रफ़ लौटना है।

(بخاری،4/192، حدیث:6312)

"या ख़ुदा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से सुब्ह़ व शाम के 5 अज़्कार

﴾1﴿ **ह़ज़रते** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि एक शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** ! صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने ऐसा बिच्छू कभी नहीं देखा जिस ने मुझे गुज़श्ता रात काटा। ह़बीबे परवर्दगार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम ने शाम के वक़्त اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (तरजमा : मैं **अल्लाह** पाक के पूरे और कामिल कलिमात के साथ मख़्लूक़ के शर से पनाह लेता हूं क्यूं न पढ़ लिया कि बिच्छू तुम्हें कोई नुक़्सान न पहुंचाता। (ابن حبان،2/180، حدیث:1016) (यहां मख़्लूक़ से मुराद वोह मख़्लूक़ है जिस से शर हो सके)

1...तरजमा : "**अल्लाह** के नाम से, **अल्लाह** "पाक" है, मैं **अल्लाह** पाक पर ईमान लाया और बुत और शैत़ान से मुन्किर हुवा।"

﴾2﴿ **हज़रते** अबान बिन उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स सुब्ह़ व शाम तीन तीन मर्तबा येह पढ़ेगा, तो उसे कोई चीज़ नुक़्सान न पहुंचा सकेगी "بِسۡمِ اللّٰہِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِہٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَھُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ"

तरजमा : **अल्लाह** के नाम से जिस के नाम की बरकत से ज़मीन व आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोही सुनता जानता है।

(ترمذی، 5/251، حدیث:3399)

﴾3﴿ **हज़रते** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने सुब्ह़ और शाम सो सो मर्तबा "سُبۡحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمۡدِہٖ" पढ़ा क़ियामत के दिन उस से अफ़्ज़ल अ़मल ले कर आने वाला कोई न होगा मगर वोह जो उस की मिस्ल कहे या उस से ज़ियादा पढ़े।

(مسلم، ص1445، حدیث:2692)

﴾4﴿ **हज़रते** अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि जिस ने सुब्ह़ व शाम सात सात मर्तबा पढ़ा : "حَسۡبِیَ اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ عَلَیۡہِ تَوَکَّلۡتُ وَھُوَ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِیۡمِ" तरजमा : मुझे **अल्लाह** काफ़ी है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है। **अल्लाह** पाक उस की तमाम परेशानियों में किफ़ायत करेगा।

(ابوداود، 4/416، حدیث:5081)

﴾5﴿ **हज़रते** मुनैज़िर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** पाक के रह़मत वाले नबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : जो सुब्ह़ के वक़्त येह पढ़े : "رَضِیۡتُ بِاللّٰہِ رَبًّا وَّ بِالۡاِسۡلَامِ دِیۡنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ نَّبِیًّا"

तरजमा : मैं **अल्लाह** पाक के रब होने और इस्लाम के दीन होने और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हूं। तो मैं उसे अपने हाथ से पकड़ कर जन्नत में दाख़िल करने की ज़मानत देता हूं।

(مجمع الزوائد، 10/157، حدیث:17005)

"अह़द" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से कलिमए तौह़ीद के 3 फ़ज़ाइल

(1) **ह़ज़रते** अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने

"لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ"

(तरजमा : **अल्लाह** पाक के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।) कहा तो इस कलिमे से कोई अ़मल आगे न बढ़ सकेगा और उस के साथ कोई गुनाह बाक़ी न रहेगा।

(مجمع الزوائد، 10/94، حدیث:16824)

(2) **ह़ज़रते** अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ब वासित़ा वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेहतरीन दुआ़ यौमे अ़रफ़ा की दुआ़ है और सब से बेहतर **कलिमा** जो मैं ने और मुझ से पहले के अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ने कहा (वोह येह है) : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ" (ترمذی، 5/339، حدیث:3596)

《3》 **हज़रते** बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे अ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने चांदी या दूध सदक़ा किया या अन्धे को रास्ता बताया तो येह एक ग़ुलाम आज़ाद करने की त़रह़ है और जिस ने "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ" कहा तो येह भी एक ग़ुलाम आज़ाद करने की त़रह़ है। (مسند امام احمد،6/408،حدیث:18541)

ईमान पर ख़ातिमा के चार अवराद

एक शख़्स बारगाहे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ में ह़ाज़िर हो कर ईमान पर ख़ातिमा बिलख़ैर के लिये दुआ़ का त़ालिब हुवा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने उस के लिये दुआ़ फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : 《1》 (रोज़ाना) 41 बार सुब्ह़ को "يَا حَیُّ يَا قَيُّوْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ" (ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ! ऐ हमेशा क़ाइम रहने वाले ! कोई मा'बूद नहीं मगर तू।) अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ (पढ़े) नीज़ 《2》 सोते वक़्त अपने सब अवराद के बा'द **सूरए काफ़िरून** रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये इस के बा'द कलाम वग़ैरा न कीजिये हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम करने के बा'द फिर **सूरए काफ़िरून** तिलावत कर लें कि ख़ातिमा इसी पर हो اِنْ شَآءَ اللّٰہ ख़ातिमा ईमान पर होगा। और 《3》 तीन बार सुब्ह़ और तीन बार शाम इस दुआ़ का विर्द रखें : "اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَّعْلَمُهٗ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُهٗ"

तरजमा : "ऐ **अल्लाह** पाक हम तेरी पनाह मांगते हैं इस से कि जान कर हम तेरे साथ किसी चीज़ को शरीक करें और हम उस से इस्तिग़फ़ार करते हैं जिस को नहीं जानते।" (مسند امام احمد،7/146،حدیث:19625 मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स.311)

بِسۡمِ اللهِ عَلٰى دِيۡنِىۡ بِسۡمِ اللهِ عَلٰى نَفۡسِىۡ وَ وُلۡدِىۡ وَاَهۡلِىۡ وَمَالِىۡ ﴿4﴾ (तरजमा : अल्लाह पाक के नाम की बरकत से मेरे दीन, जान, औलाद और अहलो माल की हिफ़ाज़त हो ।) सुब्ह व शाम तीन तीन बार पढ़िये, दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब महफ़ूज़ रहें । (शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 12) (गुरूबे आफ़्ताब से सुब्हे सादिक़ तक रात और आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह है)

गुनाहों की बख़्शिश

“لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكۡبَرُ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ وَسُبۡحٰنَ اللهِ وَلَا حَوۡلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ”

जो शख़्स येह विर्द पढ़ता है उस के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों । (مسند امام احمد، 2/662، حدیث:6977)

चार करोड़ नेकियां कमाएं

“اَشۡهَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ اِلٰهًا وَّاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا لَّمۡ يَتَّخِذۡ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا وَّلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ”

हज़रते तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि मक्की मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि जो शख़्स येह कलिमात दस मर्तबा कहे, ऐसे आदमी के लिये चार करोड़ नेकियां लिखी जाती हैं । (ترمذی، 5/289، حدیث:3484)

शैतान से बचने का अमल

“لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ لَهُ الۡمُلۡكُ وَلَهُ الۡحَمۡدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيۡءٍ قَدِيۡرٌ”

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : “जिस ने येह कलिमात

दिन में सो बार कहे तो उस का येह अ़मल दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर होगा और उस के नामए आ'माल में सो नेकियां लिखी जाएंगी और उस के सो गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे और येह कलिमात उस दिन शाम तक शैतान से उस की हिफ़ाज़त करेंगे और कोई शख़्स उस से बेहतर अ़मल ले कर नहीं आएगा मगर वोह जिस ने उस से ज़ियादा येह अ़मल किया।" (بخاری،2/402،حدیث:3293)

ग़ीबत से बचने का मदनी नुस्ख़ा

हज़रते अ़ल्लामा मजदुद्दीन फ़ीरोज़आबादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से मन्कूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो तो कहो : "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ وَصَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ" तो **अल्लाह** पाक तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा और जब मजलिस से उठो तो कहो : "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ وَصَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ" तो वोह फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी ग़ीबत करने से बाज़ रखेगा।

(القول البدیع،ص278)

पांच मदनी फूल

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللهُ عَنْه का इर्शादे सआ़दत बुन्याद है : पांच आ़दतें ऐसी हैं कि कोई इन्हें इख़्तियार कर ले तो दुन्या व आख़िरत में सआ़दत मन्द हो जाए। ﴾1﴿ वक़्तन फ़ वक़्तन "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहता रहे ﴾2﴿ जब किसी मुसीबत में मुब्तला हो (मसलन बीमार हो या नुक़्सान हो जाए या परेशानी की ख़बर सुने) तो "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ" और "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ"

पढ़े ﴿3﴾ जब भी ने'मत मिले तो शुक्राने में "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" कहे ﴿4﴾ जब किसी (जाइज़) काम का आग़ाज़ करे तो "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" पढ़े और ﴿5﴾ जब गुनाह कर बैठे तो यूं कहे, "اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ" (या'नी मैं अ़ज़्मत वाले **अल्लाह** पाक से मग़्फ़िरत त़लब करते हुए उस की त़रफ़ तौबा करता हूं।) (المنبہات، ص57)

जादू और बलाओं से हि़फ़ाज़त के लिये शश क़ुफ़्ल

इन छे दुआ़ओं को "शश क़ुफ़्ल" कहते हैं जो शख़्स रात को हमेशा **शश क़ुफ़्ल** पढ़ता रहे या लिख कर अपने पास रखे वोह हर ख़ौफ़ व ख़त़रे से और जादू से और हर क़िस्म की बलाओं से اِنْ شَآءَ اللّٰه मह़फ़ूज़ रहेगा। (जन्नती ज़ेवर, स. 582)

क़ुफ़्ले अव्वल : "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْئٌ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ"

क़ुफ़्ले दुवुम : "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الْخَلَّاقِ الْعَلِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْئٌ وَّهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ"

क़ुफ़्ले सिवुम : "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْئٌ وَّهُوَ الْعَلِيْمُ الْبَصِيْرُ"

क़ुफ़्ले चहारुम : "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْئٌ وَّهُوَ الْغَنِيُّ الْقَدِيْرُ"

क़ुफ़्ले पन्जुम : "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْئٌ وَّهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ"

कुफ़्ले शशुम : "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ بِسۡمِ اللّٰہِ السَّمِیۡعِ الۡبَصِیۡرِ الَّذِیۡ لَیۡسَ کَمِثۡلِہٖ شَیۡءٌ وَّ ھُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡغَفُوۡرُ الۡحَکِیۡمُ فَاللّٰہُ خَیۡرٌ حَافِظًا وَّ ھُوَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِیۡنَ"

नमाज़ के बा'द पढ़े जाने वाले अवराद

नमाज़ के बा'द जो अज़्कारे तवीला (तवील अवराद) अहादीसे मुबारका में वारिद हैं, वोह ज़ोहर व मग़्रिब व इशा में सुन्नतों के बा'द पढ़े जाएं, क़ब्ले सुन्नत मुख़्तसर दुआ पर क़नाअत चाहिये, वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा। (बहारे शरीअत, 1/539, हिस्सा : 3 ردالمحتار، 2/300)

अहादीसे मुबारका में किसी दुआ की निस्बत जो ता'दाद वारिद है उस से कम ज़ियादा न करे कि जो फ़ज़ाइल उन अज़्कार के लिये हैं वोह उसी अदद के साथ मख़्सूस हैं उन में कम ज़ियादा करने की मिसाल येह है कि कोई कुफ़्ल (ताला) किसी ख़ास क़िस्म की कुन्जी से खुलता है अब अगर कुन्जी में दन्दाने कम या ज़ाइद कर दें तो उस से न खुलेगा, अलबत्ता अगर शुमार में शक वाक़ेअ़ हो तो ज़ियादा कर सकता है और येह ज़ियादत (बढ़ाना) नहीं बल्कि इत्माम (मुकम्मल करना) है।

(ردالمحتار، 2/302 बहारे शरीअत, 1/539, हिस्सा : 3)

पन्ज वक़्ता नमाज़ों के सुनन व नवाफ़िल से फ़राग़त के बा'द ज़ैल के अवराद पढ़ लीजिये सहूलत के लिये नम्बर ज़रूर दिये हैं मगर इन में तरतीब शर्त़ नहीं है। हर विर्द के अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ना सोने पे सुहागा है।

﴾1﴿ "आयतुल कुरसी" एक एक बार पढ़ने वाला मरते ही दाख़िले जन्नत हो। (مشکاۃ المصابیح، 1/197،حدیث:974)

﴾2﴿ "اَللّٰھُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ" तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! तू अपने ज़िक्र, अपने शुक्र और अपनी अच्छी इ़बादत करने पर मेरी मदद फ़रमा। (ابوداود،2/123،حدیث:1522)

﴾3﴿ "اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ"(1) (तीन तीन बार) उस के गुनाह मुआफ़ हों अगर्चे वोह मैदाने जिहाद से भागा हुवा हो। (ترمذی،5/336،حدیث:3588)

﴾4﴿ तस्बीहे़ फ़ाति़मा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا : سُبْحٰنَ الله तेंतीस बार, اَلْحَمْدُ لِلّٰه तेंतीस बार, "اَللهُ اَكْبَر" तेंतीस बार येह 99 हुए, आख़िर में "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ"(2) एक बार पढ़ कर (100 का अ़दद पूरा कर ले) इस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों।

﴾5﴿ हर नमाज़ के बा'द पेशानी के अगले हिस्से पर हाथ रख कर पढ़े :
"بِسْمِ اللهِ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ؕ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّی الْهَمَّ وَالْحُزْنَ"(3)

---

1 तरजमा : मैं **अल्लाह** पाक से मुआ़फ़ी मांगता (मांगती) हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह ज़िन्दा है क़ाइम रखने वाला है और उस की बारगाह में तौबा करता (करती) हूं।

2 तरजमा : **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह यक्ता व यगाना है उस का कोई शरीक नहीं। उसी का मुल्क है। उसी की ह़म्द है। वोह हर शै पर क़ादिर है।

3 तरजमा : **अल्लाह** पाक के नाम से शुरूअ़ जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह रह़मान व रह़ीम है। ऐ **अल्लाह** पाक ! मुझ से ग़म व मलाल दूर फ़रमा।

(पढ़ने के बा'द हाथ खींच कर पेशानी तक लाए) तो हर ग़म व परेशानी से बचे। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मज़्कूरा दुआ के आख़िर में मज़ीद इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा फ़रमाया है : "وَعَنْ اَهْلِ السُّنَّةِ" या'नी और अहले सुन्नत से।

《6》 अ़स्र व फ़ज्र के बा'द बिग़ैर पावं बदले, बिग़ैर कलाम किये (1)"لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ" दस दस बार पढ़िये। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1/539 हिस्सा : 3)

《7》 ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** करीम के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने नमाज़ के बा'द येह कहा, (2)"سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ" तो वोह मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर उठेगा। (مجمع الزوائد، 10/129، حدیث:16928)

《8》 ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस मर्तबा قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) पढ़ेगा **अल्लाह** पाक उस के लिये अपनी रिज़ा और मग़्फ़िरत लाज़िम फ़रमा देगा।"

(تفسیر در منثور، پ30، الاخلاص، تحت الآیۃ:1، 8/678)

---

1 तरजमा : **अल्लाह** पाक के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह तन्हा है, उस का कोई शरीक नहीं, उस के लिये मुल्क व ह़म्द है, उसी के हाथ में ख़ैर है, वोह ज़िन्दा करता है और मौत देता है और वोह हर शै पर क़ादिर है।

2 तरजमा : "पाक है अ़ज़मत वाला रब और उसी की ता'रीफ़ है और उसी की अ़ता से नेकी की तौफ़ीक़ और गुनाह से बचने की क़ुव्वत (मिलती) है।"

﴾9﴿ ह़ज़रते ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से रिवायत है नबियों के सुल्त़ान मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स़ हर नमाज़ के बा'द سُبۡحٰنَ رَبِّکَ رَبِّ الۡعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوۡنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَی الۡمُرۡسَلِیۡنَ ﴿۱۸۱﴾ وَ الۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۱۸۲﴾ (پ23، الصّٰفّٰت:180-182)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : "पाकी है तुम्हारे रब को इ़ज़्ज़त वाले रब को उन की बातों से और सलाम है पैग़म्बरों पर और सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो सारे जहान का रब है।" तीन बार पढ़ेगा गोया उस ने अज्र का बहुत बड़ा पैमाना भर लिया। (تفسیر در منثور، 23، الصّٰفّٰت، تحت الآیۃ:180، 7/141)

मिन्टों में चार ख़त्मे क़ुरआने पाक का सवाब

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से रिवायत है मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : जो बा'दे फ़ज्र बारह मर्तबा قُلۡ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) पढ़ेगा गोया वोह चार बार (पूरा) क़ुरआन पढ़ेगा और उस दिन उस का येह अ़मल अहले ज़मीन से अफ़्ज़ल है जब कि वोह तक़्वा का पाबन्द रहे। (شعب الایمان، 2/501، حدیث:2528)

शैत़ान से मह़फ़ूज़ रहने का अ़मल

सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने नमाज़े फ़ज्र अदा की और बात किये बिग़ैर قُلۡ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) को दस मर्तबा पढ़ा तो उस दिन में उसे कोई गुनाह न पहुंचेगा और वोह शैत़ान से बचाया जाएगा। (تفسیر در منثور، پ30، الاخلاص تحت الآیۃ:1، 8/678)

नमाज़ के बा'द पढ़ने के मज़ीद अवराद मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअ़त हिस्सा 3 सफ़्हा 107 ता 110 पर, अल वज़ीफ़तुल करीमा और शजरए क़ादिरिय्या में मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस

इस्तिग़फ़ार करने के 5 फ़ज़ाइल..........1

कलिमए तृय्यिबा के 4 फ़ज़ाइल.........3

"سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ" पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल.......................................4

"لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه" पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल................................5

बेदार होते वक़्त के 3 अवराद............6

सुब्ह व शाम के 5 अज़्कार..............7

कलिमए तौहीद के 3 फ़ज़ाइल...........9

ईमान पर ख़ातिमा के चार अवराद...10

गुनाहों की बख़्शिश....................11

चार करोड़ नेकियां कमाएं..................11

शैतान से बचने का अ़मल..................11

ग़ीबत से बचने का मदनी नुस्ख़ा..........12

पांच मदनी फूल.............................12

जादू और बलाओं से हिफ़ाज़त के लिये शश कुफ़्ल............................13

नमाज़ के बा'द पढ़े जाने वाले अवराद...14

मिनटों में चार ख़त्मे कुरआने पाक का सवाब...................................17

शैतान से महफ़ूज़ रहने का अ़मल.........17

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अगर तुम इतनी ख़ताएं करो कि वोह आस्मान तक पहुंच जाएं फिर तौबा करो तो **अल्लाह** पाक ज़रूर तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाएगा।

(ابن ماجہ، 4/490، حدیث:4248)